रेम्ब्रांट असाधारण प्रतिभा के कलाकार थे किन्तु उनकी मौलिकता के प्रकट होने में समय लगा। उनकी आयु के चालीसवें वर्ष तक की कलाकृतियों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, पहले वर्ग में उनके व्यक्ति चित्र आते हैं जो उन्होंने कौशल व आत्मविश्वास के साथ बनाये हैं किन्तु उनसे उनकी मौलिक प्रतिभा का परिचय नहीं होता और उनमें समकालीन डच कलाकारों के समान प्रकाश का सूक्ष्म व प्रभावी अंकन भी नहीं है; दूसरे वर्ग में धार्मिक व पौराणिक विषयों के चित्र हैं जो उन्होंने सामान्य आडम्बरपूर्ण शैली में बनाये हैं। 'शरीर-रचना का पाठ' व 'जहाज निर्माता' पहले वर्ग के उदाहरण हैं और सॅम्सन को अंधा करना व 'प्रासेर्पाईन का बलात्कार' दूसरे वर्ग के हैं। यदि रेम्ब्रांट की 1644 में मृत्यु होती तो उनकी कुशल कलाकारों में गणना होती किन्तु उनकी अद्वितीय प्रतिभा का 'रात का पहरा' चित्र के अतिरिक्त, कोई प्रमाण नहीं मिलता। 1644 के पश्चात् रेम्ब्रांट की कला को एक नयी दिशा मिली और वे कुशल चित्रकार न रहकर आश्चर्यजनक उन्मुक्तता से कलासर्जन करने लगे; समय के साथ उनकी शैली सरल किन्तु प्रभावी यथार्थ से जुड़ी होते हुए भी कल्पनारम्य एवं आत्मिक हुई व कला जगत में वे द्रष्टा के रूप में अमर हुए।

रेम्ब्रांट की कला में हुए परिवर्तन का सरल विश्लेषण सम्भव नहीं है। प्रिय पत्नी की मृत्यु, हैन्ड्रिक स्टोफेल्स का जीवन में प्रवेश, 'रात का पहरा' चित्र को मिली क्षुद्र प्रतिक्रिया व आर्थिक दिवाला इनसे इसका स्पष्टीकरण देना रेम्ब्रांट की कला की महानता के प्रति अन्याय होगा, यद्यपि इसकी पूर्ण सम्भावना है कि उपर्युक्त कारणों ने परिवर्तन की प्रगति को तेज किया होगा। अब उनकी कला का स्वरूप अधिक जटिल हो गया; उसमें भौतिक सौन्दर्य के साथ आध्यात्मिक प्रवृत्ति व यथार्थता के साथ काल्पनिक रूप का द्वंद्वात्मक दर्शन होने लगा। अपनी आन्तरिक भावनाओं को दृश्य रूप में अभिव्यक्त करना उनकी कला का ध्येय बन गया। इसके साथ कला की प्रविधियों पर प्रभुत्व करने में उनकी दिलचस्पी बढ़ी। क्रान्तिकारी प्रणेताओं के समान उनको भी कलात्मक अंतर्विरोधों का सामना करना पड़ा व इसमें साधना के बल पर उन्होंने कला को अपने ध्येय के अनुसार सार्थक बनाया। उनके पूर्वकालीन यथार्थवादी विषयों के तथा पौराणिक या धार्मिक विषयों के चित्रों में बहुत कम सामंजस्य है, किन्तु बाद में यह अन्तर क्रमशः घटता गया व उत्तरकालीन भिन्न विषयों के चित्रों में वही अद्वितीय अभिव्यंजक एकता प्रतीत होती है। (चित्र 10)

रेम्ब्रांट की कला का विश्लेषण सरल नहीं है, किन्तु उसकी दो विशेषताएँ स्पष्ट हैं। उन्होंने अन्य समकालीन डच चित्रकारों के समान, आसपास के जनजीवन का यथार्थ चित्रण करने के बजाय धार्मिक व पौराणिक विषयों के भी काल्पनिक पूर्वीय पार्श्वभूमि पर चित्र बनाये। इसके अलावा उन्होंने—विशेषतः उत्तरायु के चित्रों में प्रकाश का हूबहू चित्रण करने के बजाय, उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन या उसका केन्द्रीयकरण किया। वे यथार्थ चित्रण में निपुण थे, इसका प्रमाण उनके चित्र 'स्नान के पश्चात् बाथशेबा', 'सिंडिक्स' व बहुत से व्यक्ति चित्रों व आत्मचित्रों से मिलता है, किन्तु उन्होंने आत्मिक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक कल्पना का भी उपयोग किया है। उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों का रोमानी चित्रण किया है। संक्षेप में, रेम्ब्रांट मुख्यतः धार्मिक प्रवृत्ति के अद्वितीय प्रतिभा

Scanned with CamScanner

के कलाकार थे; उनके धार्मिक चित्रों के उदाहरण हैं—'एमॉस में तीर्थ यात्री', 'सॉल के सामने वीणा बजाते हुए डेविड', 'अपव्ययी पुत्र की घर वापसी'। ये बायबल के पूर्व विधान से काफी प्रभावित थे। उनका एचिंग कार्य व रंगाकन उच्च कोटि का है।

रेम्ब्रांट के बहुत से शिष्य थे। गोवर्ट फ्लिंक व फर्डिनांड बोल के व्यक्ति चित्रों व धार्मिक चित्रों में रेम्ब्रांट का यथातथ्य अनुकरण है। कारेल फाब्रिटियस (1620–54) ने अधिक समझदारी से कार्य किया है; 'वृद्ध स्त्री', 'गोल्डफिंच' व 'आदमी का व्यक्ति चित्र' उनके प्रसिद्ध चित्र हैं। निकोलास मास (1632–93) ने जनजीवन के यथार्थ दृश्यों का चित्रण किया। एर्ट वान गेल्डर ने (1645–1727) रेम्ब्रांट के समान बायबल के विषयों को लेकर काल्पनिक पार्श्व भूमि पर धार्मिक चित्र बनाये।

Scanned with CamScanner